प्रथम अध्याय

जगदीश गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

जगदीश गुप्त: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जगदीश गुप्त नयी कविता के कवि और जानेमाने समर्थ समीक्षक भी हैं । गुप्त जी चित्रकार कवि हैं । सफल चितेरा होने के कारण शब्द चित्रों में भी रंग संगति एवं औचित्य पर विशेष ध्यान देते हैं । शब्द चयन में उनकी सुरुचि का परिचय मिलता है । छायावादी रचनाओं से भी उनका निकट का संपर्क रहा है । वे अपनी निष्ठा, स्पष्टवादिता एवं सौद्धांतिक आग्रह के लिए विख्यात हैं । जब हिंदी में नयी कविता का आंदोलन चला तब चारों ओर उन्हें आलोचकों का विरोध सहन करना पडा । " जगदीश गुप्त खुद नयी कविता के कवि और साथ ही समर्थ आलोचक होने के कारण समीक्षकों के अन्यायपूर्ण आक्षेपों का सतर्क प्रतिवाद करते हुए उन्होंने नयी कविता - आंदोलन को जो गति दी उसमें उन्हें स्वयं सार्थकता का अनुभव हुआ है, यद्यपि विरोध और आघात कम नहीं सहन करने पडे । "[1] अनेक वर्षों तक उन्होंने नयी कविता का संपादन कार्य भी किया ।

जीवन परिचय :

डॉ जगदीश गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश में हरदोई जिले में,शाहाबाद गाँव में,5 जुलाई 1926 में हुआ ।"जिसे कभी पुष्पावती ,कभी अंगाईखोडा कहा गया वह दक्षिण पांचाल क्षेत्र का एक प्राचीन सांस्कृतिक केंद्र था । उसे ही मुगल काल में शाहाबाद नाम मिला। "[2]

बालक जगदीश गुप्त-

जगदीश गुप्त मुलतः कवि और चित्रकार हैं । साथ ही उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपनी लेखनी चलाई है । उनमें बचपन से ही कविता में ही रुचि रही हैं । खुद काव्य का पठन करने की आस्था उनमें प्रारंभ से ही विद्यमान हैं। जब वह सीतापुर के **'राष्ट्रीय महाजनी पाठशाला'**का विद्यार्थी था तब,सीतापुर के साहित्यिक वातावरण की छाया बालक जगदीश पर पडने लगी थी ।

बचपन से ही जगदीश का संपर्क डॉ. नवल बिहारी मिश्र जैसे समीक्षकों तथा अनूप शर्मा, वंशीधर शुक्ल और कृपाण जी आदि कवियों से बना रहा । उसी समय शाहाबाद ,सीतापुर और कानपुर आदि में सर्वत्र समस्यापूर्तिपरक रचनाप्रणाती छायी हुई थी । इस साहित्यिक वातावरण

का प्रभाव भी बालक जगदीश गुप्त पर हुआ । इलाहाबाद पहुँचने पर भी उन्होंने पाया कि वहाँ भी समस्यापुर्तिपरक रचनाएँ निर्माण हो रही हैं।

मेधावी छात्र

अपने छात्र जीवन में ही कुछ अच्छे मित्रों और कवियों का साथ मिलने से जगदीश की मेधावी प्रतिभा अधिकाधिक विकसित होती रही । दोस्तों में प्रतिभा परीक्षा के हेतु छंद लिखे-लिखवाये जाते थे । 'छंद-शती' में कवि कथन में स्वयं जगदीश गुप्त जी उन दिनों की याद मुखर करते हैं कि -

" बी.ए. प्रथम वर्ष में ही संकट सामने आ खडा हुआ । ' डॉ. रसाल' ब्रजभाषा के कट्टर समर्थक थे और ' गजेंद्रनाथ चतुर्वेदी ' तथा 'ईश' उपनामधारी एक अन्य धाकड़ छंदकार मेरे सहपाठी थे, जिनके लिए एक ही दिन में सौ-पचास छंद लिख डालना मामुली बात थी । कम से कम मैंने ऐसी चर्चा सुन रखखी थी । प्रतिभा परीक्षण के लिए रसाल जी ने हमारे आगे एक जंगी समस्या धर दी--

'सेस मयंक लरैं,झरै सम्पा ' मैंने इस पर एक ही छंद रचा जो सर्वोपरि माना गया और पुरस्कार का हकदार घोषित हुआ । " [3]

इसप्रकार जगदीश गुप्त का काव्य का अभ्यास उन दिनों इस मार्ग से होने लगा था । जब उनकी माता जी ' नैमिषारण्य' अपने दीक्षा गुरु स्वामी नारदानंद जी के आश्रम पर रहा करती थी, तब कभी - कभी जगदीश गुप्त जी भी उस आश्रम में आया करते थे ।

इनका रेल यात्रा में और कभी गोमती के तट पर घुमते फिरते छंदरचना का क्रम सहज रीति से प्रायः निरंतर चला करता था । वहाँ की रेतिली जमीन और खुले आकाश ने ब्रजभाषा में ही नहीं बल्कि खडीबोली में भी बहुत कुछ लिखने को इन्हें प्रेरित किया । 'भेटि के चंद समेटि के तारक जाने कहाँ चलि जाति विभावरी। ' यह छंद वहीं रचा गया ।

सन 1946 में 'म्योर होस्टल ' में रहकर उन्होंने एम. ए. किया ।

ब्रजभाषा काव्य के लालित्य ने इन्हें आरंभ में ही मोह लिया । बाद में वे छायावाद की ओर झुके । इस अवधि में उन्होंने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया । इससे ही उन्हें मौलिक काव्य लिखने की प्रेरणा मिली । वे विशेष रुप से सनेही तथा माखनलाल चतुर्वेदी से प्रभावित हुए ।

चित्रकारिता-

जगदीश गुप्त जी कवि के साथ साथ एक सफल चित्रकार भी हैं । वे आधुनिक चित्रकला में निपुण हैं । वर्तमान भारतीय चित्रकरिता को डॉ. गुप्त जी ने महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है । चित्रकला का विधिवत ज्ञान उन्होंने आचार्य क्षितींद्रनाथ मुजुमदार के संपर्क में प्राप्त किया और विभिन्न शैलियों में बहुसंख्य चित्रों का अंकन भी गुप्त जी ने किया है । इसीप्रकार कविता की तरह ही चित्रकरिता के क्षेत्र में भी गुप्त जी का नाम अक्षुण्ण रहेगा । विशेषतः रेखाचित्र के संदर्भ में भारतीय चित्रकारिता को उनका मौलिक योगदान मिला है .

शिक्षा -

एम. ए., डी.फिल्. चित्रकला एवं संस्कृत में डिप्लोमा (इलाहाबाद विश्वविद्यालय से)
'साहित्य वाचस्पति ' हिंदी साहित्य सम्मेलन ।

शोध- ग्रंथ -

'गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण- काव्य का तुलनात्मक अध्ययन'
आपका प्रस्तुत शोध कार्य भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में प्रथम शोध - कार्य रहा है ।

अध्यापन -

सन 1950 से हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। इस विश्वविद्यालय में ही कई वर्षोंतक विभागाध्यक्ष रहे और सन् 1986-87 में अवकाश प्राप्त किया । तदुपरान्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च शोध की विशेष योजना के अंतर्गत कार्यरत हैं ।

रचना सम्मान -

जगदीश गुप्त ने अपने जीवन में अध्यापन कार्य किया । उसके साथ ही वे विभिन्न

विश्वविद्यालयों में शोध परीक्षक रहे हैं । उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण पदों का भार संभाला है । जैसे प्रधानमंत्री - भारतीय हिंदी परिषद, भूतपूर्व अध्यक्ष -टीचर्स फोरम,इलाहाबाद विश्वविद्यालय आदि । उनके कार्य के लिए उन्हें निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं

1 ब्रज साहित्य मण्डल,मथुरा द्वारा
शोध -ग्रंथ 'गुजराती एवं ब्रजभाषा
कृष्णकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन '
के लिए विशिष्ट सम्मान एवं पुरस्कार ।

2 'प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला ' पुस्तक
उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ एवं
साहित्य एकेडेमी मध्यप्रदेश द्वारा
पुरस्कृत एवं सम्मानित ।

3 ब्रजभाषा काव्य 'छंदशती' उत्तरप्रदेश
हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत एवं
प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित ।984 ।

डॉ जगदीश गुप्त का कृतित्व -

जगदीश गुप्त ने लिखने का कार्य सन ।945 से ही आरंभ किया । तब से लेकर आज तक उनकी अनेक काव्यकृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं । वे नयी कविता के लब्ध प्रतिष्ठ कवियों में एक हैं । कवि के साथ-साथ वे एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता, संपादक एवं चित्रकार भी हैं। उन्होंने अनेक रचनाओं का निर्माण किया हैं और हिंदी कविता को एक महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं ।

डॉ. जगदीश गुप्त जी से किये पत्राचार के बाद उन्हींसे मिली, छपी हुई सूचि 'जगदीश गुप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के आधार पर उनकी निम्नलिखित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं —

प्रकाशन एवं प्रकाशक

वर्ष	पुस्तक	प्रकाशक
1954	नयी कविता संपादन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
		किताब महल,लोक-भारती इलाहाबाद ।
1955	नाँव के पाँव	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,
		गोरखपुर ।
1957	लेखक और राज्य	भारती प्रकाशन,इलाहाबाद ।
1957	गुजराजी और ब्रजभाषा	हिंदी परिषद प्रकाशन,
	कृष्ण काव्य का	इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।
	तुलनात्मक अध्ययन	
1959	शब्ददंश	भारती भंडार,इलाहाबाद ।
1961	भारतीय कला के	नेशनल पब्लिशिंग
	पदचिह्न	हाऊस,दिल्ली ।
1961	रीतिकाव्य- संग्रह	ग्रंथम,रामबाग,कानपुर ।
1964	हिम बिद्ध	भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली ।
1964	स्नातकोत्तर हिंदी	हिंदी विभाग ,इलाहाबाद,
	शिक्षण-कार्य-शिबिर	विश्वविद्यालय ।
1967	प्रागैतिहासिक भारतीय	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।
	चित्रकला	
1968	रीतिकाव्य	वसुमति प्रकाशन,इलाहाबाद ।
1968	कृष्ण-भक्ति काव्य	वसुमति प्रकाशन, इलाहाबाद ।
1970	आदिम एकांत	राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली ।
1971	नयी कविता: स्वरुप	भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली ।
	और समस्याएँ	
1971	'परिमल'स्मारिका	
	रजत - पर्व	
1972	काव्यसेतु	साहित्य भवन, इलाहाबाद ।

1973	युग्म	भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली ।
1973	कवितान्तर	ग्रंथम,रामबाग,कानपुर ।
1974	त्रयी-1	नयी कविता प्रकाशन, नागवासुके,इलहाबाद ।
1976	त्रयी-2	नयी कविता प्रकाशन, नागवासुकि,इलाहाबाद ।
1977	शम्बूक	लोकभारती,इलाहाबाद ।
1979	छंद- शती	लोकभारती,इलाहाबाद ।
1981	कला त्रैमासिक बाल- कला अंक	उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी,लखनऊ ।
1983	केशवदास	साहित्य अकादमी,दिल्ली ।
1983	'उध्दवशतक' संपादन	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
1983	नक्धा	भारतीय प्रकाशन,मेरठ ।
1984	गोपा गौतम	वाणी प्रकाशन,दिल्ली ।
1985	बोधि-वृक्ष	वाणी प्रकाशन,दिल्ली ।
1985	हिंदी की प्रकृति और विकास	हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद ।
1987	माँ के लिए	नयी कविता प्रकाशन, इलाहाबाद ।
1988	साँझ	प्रतिमान प्रकाशन,इलाहाबाद ।
1989	कुम्भ- दर्शन	सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, लखनऊ ।
1989	जयंत	जयभारती प्रकाशन,इलाहाबाद ।
1989	त्रयी - 3	नयी कविता प्रकाशन, नागवासुकि, इलाहाबाद । वितरक जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद ।

1990	माँ के लिए	हिंदुस्तानी एकेडेमी,
	तमिल अनुवाद सहीत	इलाहाबाद ।
1990	शांता(पूर्णताके क्रम में)	-

संपादन

पुस्तक	वर्ष
नयी कविता	1984-67
रीति काव्य संग्रह	1961
काव्यसेतु	1972
कवितान्तर	1973
त्रयी - 2	1976
नवधा(अज्ञेय के साथ संपादित)	1983
उध्दव- शतक	1983

अभिरुचियाँ और दिशाएँ

कला संदर्भ

संस्था -संस्थापन - 'तूलिका' ' रुप शिल्प' 'कला संगम ' तथा केंद्रीय सांस्कृतिक समिति आदि अनेक कला संस्थाओं का स्थापन एवं संचालन ।'प्रागैतिहासिक चित्रकला' के स्वत:प्रेरित विशिष्ट अनुशीलन क्रम में भारत के अज्ञात शिलाओं एवं गुफाओं की प्राथमिक खोज,शिला- चित्रों की अनुकृतियों का अंकन और प्रकाशन । विभिन्न स्थानों में अनेक एकल चित्र-प्रदर्शन

1. सन 1959 में सुधीर खास्तगीर द्वारा आमंत्रित तथा प्रासेद्ध कला समीक्षक राधा कमल मुखर्जी द्वारा उद्घाटित ।
2. सन् 1973 , लखनऊ अकादमी में राज्यपाल महामहिम अकबर अली द्वारा उद्घाटित ।
3. सन् 1976 , ललित कला अकादमी दिल्ली में केंद्रीय मंत्री श्री के. सी. पंत द्वारा उद्घाटित ।

4 काठमाण्डू नेपाल- भारतीय राजदूत महामहित एच.सी.सरीन द्वारा उद्घाटित-1983।

5 अन्य अनेक एकल तथा सम्मिलित प्रदर्शन प्रयाग में । श्री सुमित्रानंदन पंत,श्री राजन नेहरु आदि द्वारा उद्घाटित ।

शिल्प - सहयोग

निजी कृतियों का अलंकरण आवरण तथा अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं एवं अभिनंदन ग्रंथों में कलात्मक सहयोग ।

मूर्ति एवं पुरातत्व:विशेष संदर्भ

अपने जन्मस्थान शाहाबाद, हरदोई में व्यक्तिगत रुप से प्राप्त दो हजार से अधिक लघु मृण्मूर्तियों (टेराकोटा) का अप्रतिम संग्रह ।

संग्रह की अन्य वस्तुओं में प्राचीन एवं मध्यकालीन मुद्राएँ एवं अभिलेख पात्र एवं पात्र खण्ड हैं । अधिकांश सामग्री अपने जन्म स्थान से एकत्रित ।

स्वयं एवं आत्मज अभिनव गुप्त द्वारा उपलब्ध अनेक ताम्रास्त्र राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्लीकी क्रय- समिति द्वारा प्राप्त एवं प्रदर्शित ।

जगदीश गुप्त जी सामान्य जन की आशा आकांक्षाओं के कवि हैं। समकालीन कविता के परिदृश्य में गुप्त ऐसे कवियों में एक हैं जो सहज भाषा में सच्ची सृजन क्षमता के लिए व्यापक अनुभूतियों को जनसाधारण तक लाये हैं । जहाँ अन्य कवि पाश्चात्य विचारधाराओं से आक्रांत हैं, वहाँ गुप्तजी भारतीय चिंतन का शाश्वत तत्व लिए हुए काव्य सृजन में समर्थ हुए हैं

'शम्बूक', 'गोपागौतम', 'बोधीवृक्ष' इसके अच्छे उदाहरण हैं । ये तीनों संवाद-प्रधान लघुकाव्य हैं । जिसप्रकार 'शम्बूक ' में एक पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक युग की समस्याओं को चित्रित किया है, उसी तरह 'बोधिवृक्ष' एवं 'गोपा गौतम' के माध्यम से आज की स्थितियों पर गंभीर रुप में प्रकाश डाला है तथा आधुनिक मनुष्य की जिंदगी की अनेक समस्याओं को स्पर्श किया है । इन सब रचनाओं में कवि का नया चिंतन है, कवि का अपना नया शिल्प है । उन्होंने पौराणिक प्रसंग को लेकर उसमें कई काल्पनिक प्रसंगों की भी उद्भावना की है । जिसके द्वारा उन्होंने समाज की समस्याओं का विवेचन किया है ।

डॉ. जगदीश गुप्त की कुछ प्रातिनिधिक रचनाओं का यहाँ परिचय देना आवश्यक है।

1 शम्बूक -

'शम्बूक' डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा लिखित आधुनिक चेतना का खण्डकाव्य है। जिसका रचना काल है 1977 । इस काव्य की कथाराम-चरित्र के उत्तरार्ध की शम्बूक वध की घटना है । 'शम्बूक ' की रचना 1977 में हुई है । जगदीश गुप्त की काव्य- कृतियों में 'शम्बूक' का विशिष्ट स्थान है । अपने नाम के अनुरुप यह न मात्र रामायण की कथा से संबंद्ध है, वरन कवि ने 'शम्बूक' के माध्यम से अनेक समस्याओं को उठाया है । "अतः 'शम्बूक' की प्राचीन कथा को उसी रुप में प्रस्तुत करना कवि का उद्देश नहीं है । तत्कालीन समाज और व्यवस्था को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करना कवि का लक्ष्य रहा हैं । "[4]

शम्बूक में कुल मिलाकर 8 अंश (सर्ग) हैं । कवि सर्ग की जगह "अंश" कहना अधिक उचित समझता है ।

राम अयोध्या का शक्तिशाली लोकरक्षक सम्राट है । एकबार रामराज्य में ब्राम्हण का पुत्र सॉंप के काटने से मर जाता है । इस अनर्थ का कारण शम्बूक तप माना जाता है । तब नारद ने बताया कि जब राम विपिन जाकर शम्बूक का वध करेंगे तो विप्र-सुत जीवित होगा । तब राम विपिन जाकर शम्बूक का वध करने का निश्चय करता है । जब वह शम्बूक के पास पहुँचता है तब शम्बूक राम को जो तर्कपूर्ण उत्तर देता है,उसमें वह सामंतीय व्यवस्था और वर्णव्यवस्था को नकारता है । उसके साथ ही यह भी कहता है कि यह घातक व्यवस्था शीघ्र ही नष्ट होना आवश्यक है --

" जो व्यवस्था
वर्गसीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
वह विषम
घातक व्यवस्था
शीघ्र ही हो अस्त । "[5]

यह सुनकर राम निरुत्तर हो जाता है । अतः शम्बूक आधुनिक संदर्भ में सटीक आख्यान है । शम्बूक के माध्यम से कवि ने वर्णव्यवस्था तथा सत्तापक्ष के खिलाफ सवालिया चिह्न अंकित करते हुए व्यवस्थावादियों पर प्रहार किये हैं । भारतीय जनंतत्र में व्यवस्था के द्वारा दबायी

जानेवाली आवाज के विरोध को मूलत: रचना का प्रयोजन माना है । यही कारण है कि 'शम्बूक' नयी कविता की बहुचर्चित प्रबंध काव्य-कृति बन गई है ।

2 **गोपा गौतम -**

गोपा- गौतम एक संवाद काव्य है । इस काव्य की रचना सन 1984 में हुई है । इस संवाद काव्य में ।।(सर्ग) अंश हैं । इस काव्य में भिन्न धरातल पर बुद्ध युग के प्राचीन संदर्भ में उसकी नवीन अवतरणा हुई है । इसमें स्त्री पुरुष के पारस्पारिक संबंध की अंतरंग स्थितियों का निरुपण किया है और उसके साथ ही मानवीय पक्ष को उभारा है। इस काव्य में गोपा(यशोधरा) और गौतम का संवाद है । संवादों की बहुलता और प्रमुखता के कारण इसे स्वयं कवि ने 'संवाद -काव्य' की संज्ञा दी है ।

इस संवाद - काव्य में भगवान बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण की पूर्वपीठिका को नये और विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक रुप में प्रस्तुत करने का कवि ने प्रयत्न किया है ।" प्रचलित मान्यता के अनुरुप गौतम के महाभिनिष्क्रमण को अनुभवत्रय अर्थात जरा,रोग और मृत्यु दर्शन से ही अनुप्रेरित मान लेने पर ससांर से उनकी उत्कट विरक्ति की पूरी भूमिका सामने नहीं आती।"[6] स्वयं कवि का मत ऐसा है कि बुढापा, बीमारी और मृत्यु के दर्शन से ही गौतम ने संसार का त्याग नहीं किया बल्कि इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं ।

डॉ. जगदीश गुप्त ने इस संवाद काव्य में बुद्ध के महानिर्वाण के पहले वाले प्रसंग को लेकर इस काव्य का ढाँचा खडा किया है। परंतु इस पौराणिक प्रसंग को लेकर उसमें उन्होंने कई काल्पनिक प्रसंगों की भी उद्भावना की है । इसके द्वारा इन्होंने नारियों की समस्याओं का विवेचन किया है । कवि ने स्वयं कहा है -

"मैंने यशोधरा (गोपा) की नई परिकल्पना की है, जिसमें उसके माता रुप की अपेक्षा नारी रुप प्रधान है । यह स्वाभाविक है कि गौतम की नारी विषयक धारणा बनाने में गोपा का प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से, विशेष योग रहा हो । **अबलापन मुझे उसके सर्वथा अनुपयुक्त लगा ।** जिस गोपा को मैंने रुपायित किया है वह शांत सौम्य स्वभाववाले गौतम की सहधर्मिणी होकर भी सबला है । "[7]

3. छंद - शती -

डॉ. जगदीश गुप्त की यह 1979 में लिखी हुई रचना है । इसमें डॉ. गुप्त ने मौलिक छंदों का समावेश किया है । यह शताधिक छंदों का रेखानुकृति संयुक्त नवप्रकाशित संकलन है । छंद - शती में इन्होंने कुछ चुने हुए छंदो का ही संकलन किया है । इस रचना के संबंध में स्वयं कवि ने कहा है "इस छंद-शती में मैंने अपने मौलिक छंदों का चयन किया है और वह भी ऐसा नहीं कि समस्त समशील रचनाएँ इसमें आ गयी हो । वस्तुत : इसके अंतर्गत सवैया छंद में जो कुछ ब्रजभाषा में लिखा है, उसमें से भी लगभग आधा अंश ही समाविष्ट हो सका है । क्योंकि सौ से अधिक छंदों का संग्रह भारी पडता है,ऐसा मुझे कई दृष्टियों से लगा।[8]

छंद-शती के कुछ ही छंद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं, अधिकांश अप्रकाशित रहे हैं । छंदों के साथ रेखानुकृति को अंकित किया है । इसके संबंध में कवि का मत है "छंद -शती में रेखानुकृतियों को विभिन्न छंदो के साथ उनके विविध वर्गों के अनुरुप इस प्रकार समन्वित किया है कि एक समरुपता का वातावरण बन सके । कोई चित्र किसी छंद का भाव पूरी तरह या अंशतः ही व्यक्त करता हो, ऐसा नहीं है । छंदों के अनुरुप उनका निर्माण नहीं हुआ है, केवल सामान्य संगति ही अभीष्ट रही है । "[9]

इसप्रकार डॉ. जगदीश गुप्त का विविध छंदों का रेखानुकृति संयुक्त नवप्रकाशित संकलन है - छंद - शती ।

4. आदिम एकांत -

सन 1970 में प्रकाशित 'आदिम एकांत ' यह एक महत्वपूर्ण रचना हैं । इस रचना में डॉ. जगदीश गुप्त के गीतों का संकलन है । यह मुख्य सात अनुभागों में विभाजित है । इस संकलन में लगभग 104 गीत संकलित किये हैं । इन गीतों पर कई दशकों के गीतों का प्रभाव स्पष्ट रुप से लक्षित होता है ।

गीतों का प्रभाव जन-मानस पर किस प्रकार पडता है इसका वर्णन स्वयं कवि ने इस प्रकार किया है - " मैंने पाया है कि लोकगीतों से लेकर सीनेगीतों तक भारतीय जन मानस को गीत कहीं इतने गहराई से जकडे हुए हैं कि वह कैसा भी हो, उसे ग्राहय हो जाता है । पर टिकता वहीं है जिसमें अनुभूति की सच्चाई अपने पारदर्शी रुप में प्रकट होती है - ऐसी सहजता के साथ जिसे कृत्रीम रुप से किसी अन्य के लिए उपलब्ध कर पाना संभव नहीं होता ।

भक्ति - भावना को जबरदस्ती सीनेगीतों की तर्ज में ढालकर गाना मुझे गन्दा लगता रहा है ।"[10]

इन गीतों में मानवीय स्नेह -विश्वास, हर्ष उल्लास,आशा - निराशा, करुणा और उदासी को अभिव्यक्त किया है । गुप्तजी ने सर्वथा संगितशून्य होकर केवल लयबोध के सहारे गीत लिखने का साहस किया है। भाव और छंद के साथ जो भी शब्द बह सके, उन्हें निःसंकोच अपनाया है। छायावादोत्तर हिंदी कविता के विकास क्रम से परिचित कोई भी सचेत कवितापारखी इन गीतों को सरलतासे पहचान सकता है । इस संकलन में अंतिम गीत ' आदिम एंकात ' है । इसके आधार पर उन्होंने इस संकलन को 'आदिम एकांत ' शीर्षक दिया है ।

इस काव्यसंग्रह में कबीर, सूरदास जायसी आदि कवियों से लेकर भारतेंदु हरिश्चंद्र, पंत , प्रसाद, निराला, दिनकर, अज्ञेय तक के कई कवियों की कविताओं का समावेश किया है। कविता के संबंध में गुप्त का मत है कि - " कविता सौंदर्यपूर्ण ढंग से अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किये गये सभी प्रयत्नों में सबसे अधिक समर्थ, सरस और सहजग्राह्यप्रयत्न है । संसार के समस्त साहित्य का प्रारंभिक रुप कविता ही रहा है ।"[11] इसप्रकार गुप्तजी काव्य को अभिव्यक्ति का सौंदर्यपूर्ण साधन मानते हैं ।

रीतिकाव्य संग्रह -

रीतिकाव्य संग्रह सन 1961 ई. में प्रकाशित संकलन है । इसमें रीतिकालीन कवियों की कविताओं का संग्रह किया है ।

डॉ. जगदीश गुप्त ने ब्रजभाषा -प्रेम-काव्य को सदा एक मूल्यवान वस्तु माना है । ब्रजभाषा काव्य के प्रति उनकी दृष्टी सौंदर्यपरक रही है । कविने भूमिका में रीतेकाव्य की परंपरा, नामकरण, रीति कवियों की जीवन दृष्टि, भक्तिभावना, काव्य का कला पक्ष आदि के संबंध में विस्तृत विवेचन किया है ।

'रीतिकाव्य संग्रह ' में 23 कवियों की रचनाओं का संकलन किंया है । इसमें मुख्य तीन भाग किये है -

(अ) रीतिग्रंथों के निर्माता कवि ।

(आ) रीति परंपरा के अनुसरणकर्ता कवि ।

(इ) रीति शैली के कवि ।

7 **नयी कविता - स्वरुप और समस्याएँ -**

'नई कविता ' को लेकर आज तक बहुत समीक्षात्मक पुस्तके लिखी हैं। इन पुस्तकों में जगदीश गुप्त की ' नयी कविता -स्वरुप और समस्याएँ 'महत्वपूर्ण समीक्षात्मक पुस्तक है । इस पुस्तक में इन्होंने छ : भाग किये हैं ।

आधुनिक कविता में आधुनिकता और मानवतावादी दृष्टि अपनायी है। इसलिए नयी कविता ने नये मनुष्य की प्रतिष्ठा बढा दी है । इसमें आधुनिक कवि मुक्तिबोध ,गिरजाकुमार माथुर, कुँवरनारायण आदि कवियों की कविता की समीक्षा की है । यह समीक्षा करते हुए इन्होंने नयी कविता की प्रतिष्ठा बढा दी है । इसके साथ ही 'अज्ञेय ' का ' बावरा अहेरी ' ' बालकृष्ण राव' का ' रात बीती ' और ' डॉ. देवराज ' का ' धरती और स्वर्ग ' इन काव्यसंग्रहों की भी समीक्षा की है । इसप्रकार आधुनिक कविता की समीक्षा करते हुए इन्होंने आधुनिक कविताओं का स्वरुप स्पष्ट कर दिया है ।

निष्कर्ष -

डॉ. जगदीश गुप्त कवि के साथ साथ एक समर्थ आलोचक, शोधकर्ता एवं संपादक हैं। वे मूलतः कवि और चित्रकार हैं । साथ ही इन्होंने आलोचना के क्षेत्र में सफलतापूर्वक अपनी लेखनी चलाई हैं । उनमें बचपन से ही कविता में रुचि रही है । खुद काव्य पठन करने की आस्था उनमें आरंभ से ही रही है । ब्रजभाषा के काव्य के लालित्य ने इन्हें आरंभ में ही मोह लिया। आगे चलकर वे छायावाद की ओर झुके । इस काल में इन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया, इससे ही इन्हें मौलिक काव्य लिखने की प्रेरणा मिली ।

जगदीश गुप्त खुद नयी कविता के कवि और साथ ही समर्थ आलोचक हैं। वे सामान्य जन की आशा आकांक्षाओं के कवि हैं। वे एक चित्रकार कवि हैं । सफल चितेरा होने के कारण शब्द चित्रों में भी रंग -संगति एवं औचित्य पर विशेष बल देते हैं। शब्द चयन में उनकी सुरुचि का परिचय मिलता है । रीतिकालीन और छायावादी रचनाओं से इनका निकट का सम्पर्क रहा हैं ।

आज जगदीश गुप्त की उम्र लगभग 66 वर्ष है । सन 1950 से 1986-87 तक इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया । इसके साथ ही अपने गहन अध्ययन और चिंतन से अनेक रचनाओं का निर्माण किया । इन्होंने लगभग 37 पुस्तके लिखी हैं। उनकी प्रारंभिक रचना 'नयी कविता संपादन ' सन 1954 में प्रकाशित हुअी । इससे लेकर आज तक उनका आजीवन लेखन कार्य चलता रहा । उनका यह लेखन कार्य आबद्ध चला है । उनकी सन

1990 की 'शांता' नामक रचना पूर्णता के क्रम में है ।

डॉ.जगदीश गुप्त की जो मौलिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, उनमें भाव, बुद्धि और कल्पना का मणिकांचन योग हुआ है । भाव की सफलता के लिए कवि ने कथा के मार्मिक अनुभूति प्रसंगो का वर्णन किया है। वस्तु वर्णन में प्रकृति, वन- पर्वत,नदियों, संध्या प्रातः रात्रि के वर्णन को स्थान दिया है ।

भावपक्ष के साथ कलापक्ष भी श्रेष्ठ है । कलापक्ष के अंतर्गत सरल और सुबोध भाषा शैली को लिया जाता है । सरल भाषा ,प्रभावमय शैली और मुक्त छंद के प्रयोग ने इनके काव्य को गरिमा प्रदान की है । इनके काव्य में शब्दालंकार और अर्थालंकार स्थान - स्थान पर मिलते हैं । इनके काव्य में व्यंजना ,लक्षण-पूर्ण भाषा का प्रयोग भी हुआ है । कहीं कहीं व्यंग्यपूर्ण उक्तियों का भी उपयोग किया है । संस्कृत -गर्भित भाषा का प्रयोग किया है । पात्रों के संवाद नाटकीयता से परिपूर्ण हैं। सारे काव्य में आदि से लेकर अन्ततक मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है । एखाद स्थान पर लोक - प्रचलित शब्दों के भी कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं । संक्षेप में कहा जा सकता है कि उनका काव्य विषय -वस्तु, पात्र योजना , दृश्य चित्रण, नायक, रसयोजना, प्रकृतिचित्रण आदि की दृष्टि से समृद्ध है ।

गुप्त स्वयं चित्रकार होने के कारण उनका काव्य भी सशक्त है । उनकी काव्य कला ,कला के लिए नहीं, जीवन के लिए है । इसीकारण ही इनके चित्रों में और इनके काव्य में हमें जीवन का चित्र स्पष्ट रुप से दिखाई देता है । काव्य लेखन में इन्होंने पौराणिक विषय लिए हैं, परंतु इन विषयों के माध्यम से आज की राजनीति और समाज का चित्र गहराई से अंकित किया है ।

संदर्भ सूची

1. डॉ. टी. आर. भट्ट -- शंम्बूक और शूद्र तपस्वी : एकमूल्यांकन
ज्ञानोदय प्रकाशन, " प्रज्ञाश्री " कल्याणनगर धारवाड़ ।
प्रथम संस्करण, 1989, पृष्ठ 34.

2. डॉ. जगदीश गुप्त -- छंदशती
लोकभारती प्रकाशन,
15 - ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलहाबाद -।
प्रथम संस्करण 1980, पृष्ठ 165

3. डॉ. जगदीश गुप्त -- छंदशती -
कविकथन, पृ. 163 - 164

4. डॉ. टी. आर. भट्ट -- शंम्बूक और शुद्र तपस्वी : एक मूल्यांकन
पृष्ठ 12

5. डॉ. जगदीश गुप्त -- शम्बूक,
लोकभारती प्रकाशन,
15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद- ।
तृतीय संस्करण 1981, पृ. 45

6. डॉ. जगदीश गुप्त -- गोपा - गौतम,
वाणी प्रकाशन दिल्ली ।
प्रथम संस्करण 1984, आधार से, पृ. 7

7. -----तदैव ----- -- पृ. 10

8. डॉ. जगदीश गुप्त -- छंद- शती,
लोक भारतीय प्रकाशन,
15 ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद -।
प्रथम संस्करण 1980, पृ. 15

9. -----तदैव ----- -- पृ. 15

10. डॉ. जगदीश गुप्त -- आदिम एकांत,
राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली,
प्रथम संस्करण - 1980, पृ. 11

11. डॉ. जगदीश गुप्त -- काव्यसेतु,
साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद-3
दूसरा संस्करण - 1972 ई. पृ. 1